जयपुर जिले में
अनुसूचित जाति की महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन एंव मूल्यांकन
Study & Evaluation of Empowering of Schedule Caste Women in Jaipur District

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर
की पीएच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध रूपरेखा

शोध निर्देशिका
डॉ0 सुनिता पचौरी
सह आचार्य भूगोल
भूगोल विभाग
सम्राट पृथ्वीराज चौहान,
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

शोधकर्ता
प्रभु दयाल रैगर
(पीएच.डी. छात्र)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)

2017

Dr. Sunita Pachori **Date : ……**

Associate Professor

Deptt. Of Geography

SPC Govt. College ,

AJMER

SUPERVISORS CERTIFICATE

This is to certify that Prabhu Dayal Raigar has been applied for Ph.D. registration under my supervision. The topic for his Ph.D. work is no **“**

जयपुर जिले मे अनुसूचित जाति की महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन एवं मूल्यांकन

Study & Evaluation of Empowering of Schedule Caste Women in Jaipur District

i. The topic related by him not been studied and is not being studied so far it any University.

ii. The work has sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.

iii. The subject will lead to valuable contribution. I have seen and approved of the outline and bibliography etc. submitted by the candidate.

iv. I have research candidate working under my supervision including the present one.

v. My date of retirement is

vi. Prabhu dayal Raigar is not my relaive.

Dr. Sunita Pachori
(Supervisor)
SPC Govt. College Ajmer

जयपुर जिले में
अनुसूचित जाति की महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन एवं मूल्यांकन

Study & Evaluation of
Empowering of Schedule Caste Women in Jaipur District

प्रस्तावना :–

जनसंख्या किसी देश का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है, जिससे न केवल प्राकृतिक संसाधानों का उपयोग संभव हो पाता है वरन कुशल, प्रशिक्षित एवं मेहनती, श्रम शक्ति द्वारा आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। यही कारण है कि किसी देश की वास्तविक ताकत उसकी मानव शक्ति की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। (भारत का भूगोल– आर.सी. तिवारी– पृष्ठ संख्या –523)

यौन अनुपात को प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है। इसे सामाजिक संकेतक के तौर पर प्रयोग किया जाता है। भारत में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार यौन अनुपात 943 था। चिंता का विषय यह है कि 1951, 1981, 2001, व 2011 के अपवादों को छोडकर 1901 से 2011 के बीच यौन अनुपात में निरन्तर घटाव देखा गया है।

साक्षरता मानव विकास और जीवन की गुणवत्ता का एक सूचकांक है। कम साक्षरता से आर्थिक, सामाजिक और वैज्ञानिक विकास में रूकावट आती है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 73 प्रतिशत लोग साक्षर थे। यद्यपि यह प्रतिशत 1901 की साक्षरता का 14 गुणा एवं 1951 का 4 गुणा है परन्तु देश की जनसंख्या के वृहद आकार के कारण विश्व में सर्वाधिक निरक्षरों की संख्या भारत में पाई जाती है। ये देश के परम्परावादी, जनजातिय और अनुसूचित जाति जनसंख्या वाले पिछड़े क्षेत्रों में पाई जाती है। (भारत का भूगोल– आर.सी. तिवारी– पृष्ठ संख्या –533)

अनुसूचित जातियां (Scheduled Castes) :–

अनुसूचित जातियां हिन्दू समाज के सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से हीन जाति समूह को प्रदर्शित करती है, इनमें अधिकांश श्रमिक, छोटे किसान और दस्तकार हैं। इनके भौगोलिक वितरण से देश में गरीबी के प्रादेशिक परिमाण का अंदाज लगाया जा सकता है। अनुसूचित जातियां एक विषम जातिय समूह है, इसमें 542 जातियां शामिल है। भारत में स्वतंत्रता के समय अनुसूचित जातियों की जनसंख्या 5.17 करोड़ थी, जो वर्ष 1981 में बढकर 10.47 करोड़ और वर्ष 2011 में 20.14 करोड़ (जो कुल जनसंख्या का 16.63 प्रतिशत) हो गई है।

इस प्रकार पिछले 60 वर्षों में इनकी जनसंख्या में तीन गुणा से भी अधिक वृद्धि हुई है। देश में अनुसूचित जातियों की सर्वाधिक जनसंख्या उत्तर प्रदेश में (4.1 करोड) कुल जनसंख्या का 20.54 प्रतिशत भाग निवास करती है तथा राजस्थान में अनुसूचित जातियों की 1.2 करोड़

जनसंख्या निवास करती है, जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का 17.8 प्रतिशत भाग है। (भारत का भूगोल– आर.सी. तिवारी– पृष्ठ संख्या –533)

मानव भूगोल (Human Geography) – पृथ्वी तल पर मानव समुदायों के स्थानिक वितरण एवं विभिन्न प्रदेशों में किये गये पर्यावरण समायोजनों का अध्ययन है। जनसंख्या वितरण सम्पूर्ण प्रकृति में समान न हो कर भिन्न–भिन्न पाया जाता है, जिसका प्रमुख कारण विभिन्न प्रकार के पर्यावरण के तत्व है, जिनके साथ–साथ मानव विभिन्न क्रिया–कलापों के तहत समायोजन करता है। यह समायोजन मानव वर्गों द्वारा पर्यावरण की शक्तियों, प्रभावों तथा प्रतिक्रियाओं के परस्पर कार्यात्मक मानव सम्बंधों के रूप में प्रादेशिक स्तर पर किया जाता है, जिसका अध्ययन मानव भूगोल में किया जाता है। प्रकृति में निवास करने वाले मानव वर्ग विभिन्न पर्यावरणों का उपयोग करते हुए, उसमें यथासम्भव परिवर्तन करते है, इन परिवर्तनों द्वारा ही समायोजन हो पाता है। परिवर्तन एवं समायोजन के फलस्वरूप मानव वर्ग सांस्कृतिक भू–दृश्यों का निर्माण करते हैं। इस प्रकार मानव भूगोल में इन सभी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों का अध्ययन किया जाता है, जिनमें मानव समुदाय क्रियाशील रहता है। (मानव भूगोल– डॉ0 आर.के. गुर्जर एवं डॉ0 बी.सी. जाट– पृष्ठ संख्या –02)

पृथ्वी पर मूलतः दो प्रकार के वातावरण पाये जाते है, प्रथम प्राकृतिक वातावरण, द्वितीय सांस्कृतिक वातावरण। मानव प्राकृतिक वातावरण में भिन्न–भिन्न रूपों में रहता है तथा मानव के विकास, वितरण तथा क्रिया–कलापों आदि में प्राकृतिक वातावरण प्रमुख प्रभावकारी कारक है। मानव इन विभिन्न पर्यावरणीय दशाओं में विकसित होकर अपने

क्रिया–कलापों के लिए अपने आप का अनुकूलित करता है, जिसमें स्थानिक भिन्नता (Spatial Differentiation) मिलती है।

ध्रुवीय प्रदेशों में रहने वाले मानव वर्ग शीत वातावरण के प्रति मध्य अक्षांशीय क्षेत्रों में रहने वाले खिरगिज शीतोष्ण वातावरण के प्रति तथा विषुवतीय क्षेत्रों में रहने वाले पिग्मी उष्ण वातारण के प्रति अनुकूलित रहकर अपनी क्रियायें करते है। इन सभी अनुकूलन दशाओं तथा स्थानिक विभिन्नताओं के आधार पर विभिन्न लक्षणों वाले पदेश मिलते हैं, जिनमें प्रत्येक प्रदेश, जनसंख्या, संसाधन, आर्थिक क्रिया–कलापों, सांस्कृतिक मूल्यों की दृष्टि से समलक्षणिक होते है। इन प्रदेशों का पृथक प्रतिरूपों के रूप में अध्ययन मानव वर्गों के क्रिया–कलापों तथा जीवन पद्धति का अध्ययन मानव भूगोल कहलाता है। इस प्रकार इसमें केवल मानवीय व्यक्तित्व का ही अध्ययन नहीं होता वरन भूतल पर किसी प्रदेश विशेष के सम्पूर्ण मानवीय समुदाय के वातावरणीय समायोजन का अध्ययन है, इसमें स्थानिक भिन्नताएं मिलती है।

मानव भूगोल के जन्मदाता एवं प्रसिद्ध जर्मन भूगोलविद् फ्रेडरिक रेटजेल ने अपनी पुस्तक मानव भूगोल (Anthropogeography) में मानव भूगांल की निम्न लिखित परिभाषा दी है :–

मानव भूगोल के दृश्य सर्वत्र पर्यावरण से सम्बंधित होते है। जो स्वयं भौतिक दशाओं का एक योग होता है।

विडाल–डी–ला–ब्लाश एक प्रसिद्ध फ्रांसिसी मानव भूगोल शास्त्री थे। जिन्होने मानव एवं पर्यावरण के पारस्परिक सम्बंधों में मानवीय समताओं एवं क्रिया–कलापों को महत्वपूर्ण मानते हुए मानव भूगोल को

परिभाषित किया है। उनके अनुसार मानव भूगोल पृथ्वी और मनुष्य के बीच पारस्परिक सम्बंधों का एक नवीन विचार प्रदान करता है, जिसमें पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले भौतिक नियमों तथा इस पर रहने वाले मनुष्यों के पारस्परिक सम्बंधों का भी संश्लिष्ट ज्ञान समाविष्ट है।

फ्रांसिसी भूगोलवेता जीन ब्रुंश के अनुसार ''वे सभी दृश्य जिनमें मानवीय क्रियायें कार्य करती है। हमारी पृथ्वी तल पर एक विशेष वर्ग के दृश्य होते है, और इस प्रकार के भौगोलिक तथ्यों के अध्ययन को मानव भूगोल कहते है।

मानववादी भूगोल का विकास मात्रात्मक भूगोल तथा प्रत्यक्षवाद (Positivism) के विरूद्ध प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप हुआ है। यह दृष्टिकोण वर्ष 1996 ई. के दशक के अन्त में आरम्भ हुआ। मानववादी भूगोलवेता मात्रात्मक तकनिकी को अस्वीकार करते हुए मानते है। ये मानवीय विश्व एवं मानवीय मुद्दों जैसे सामाजिक संस्थान, मूल्य व परम्पराओं के महत्व को नहीं समझते है। इस प्रकार मानववादी दृष्अिकोण मानवीय चेतना एवं क्रियात्मकता में सक्रिय एवं केन्द्रीय भूमिका एक मानव अभिकर्तों के रूप में प्रदान करता है। साथ ही मानवीय समाज के अस्तित्व में संचार को एक मूलभूत कारक माना है। यह मुख्य रूप से सहभागिता अवक्षेपण, चर्चा, गुणात्मक दृष्टिकोण पर बल देता है। मानववादी दृष्टिकोण में मानव को कदापि आर्थिक व्यक्ति के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है।

मानवीय संसार के रूप में पृथ्वी का संगठित ज्ञान ही मानव भूगोल कहलाता है। मानव भूगोल में मनुष्य की स्थानिक वितरण के साथ ही

उसकी भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि में सम्पूर्ण गतिविधियों का अध्ययप किया जाता है। मानव भूगोल में मनुष्य अपने वातावरण से सम्बंधों को महत्वपूर्ण माना जाता है। यह दो प्रकार के होते है – प्रथम प्राकृतिक व द्वितीय सांस्कृतिक। प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण की शक्तियों, प्रक्रियाओं तथा तथ्यों के प्रभावों व उनमें मानव द्वारा किए गए परिवर्तनों का अध्ययन मानव भूगोल का प्रमुख उद्देश्य है। मानव भूगोल में यह भी विश्लेषण किया जाता है कि पृथ्वी तल पर रहने वाला मानव समूह अपने वातावरण का किस प्रकार उपयोग करता है। मानव वातावरण के अन्तर्सम्बंधों के प्रदेशिक अध्ययन के रूप में ब्रुंश ने मानव भूगोल का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लिखा है कि मानव भूगोल का उद्देश्य मानवीय क्रिया–कलापों तथा भौतिक भूगोल के दृश्यों के मध्य सम्बंधों का अध्ययन करना है। (मानव भूगोल– डॉ0 आर.के. गुर्जर एवं डॉ0 बी.सी. जाट– पृष्ठ संख्या –05 से 10 तक)

शोध अध्ययन क्षेत्र का परिचय –

शोध का अध्ययन क्षेत्र राजस्थान के जयपुर जिले की विभिन्न तहसीलों को रखा गया है। विशेष रूप से प्रति चयन विधि से **शाहपुरा तथा आमेर एवं जमवारामगढ़, फागी** के विभिन्न गांवो को आधार में रखकर शोध किया जायेगा।

राजस्थान भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है। इसका अक्षांश 23°3′ उ. से 30° 12′ उत्तरी अक्षांश तथा 69° 30′ पू. से 78° 17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग कि.मी. है। जो देष के कुल क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है। तथा जनसंख्या

6,85,48,437 है। यहा पुरूष एवं महिला जनसंख्या क्रमशः 35620086 तथा 33000943एवं लिंगानुपात 926 तथा जन घनत्व 201 है।इसका 61 प्रतिशत भाग रेगिस्तान में स्थित है। इस प्रकार देश की कुल बंजर भूमि का 20 प्रतिशत हिस्सा राजस्थान में स्थित है।

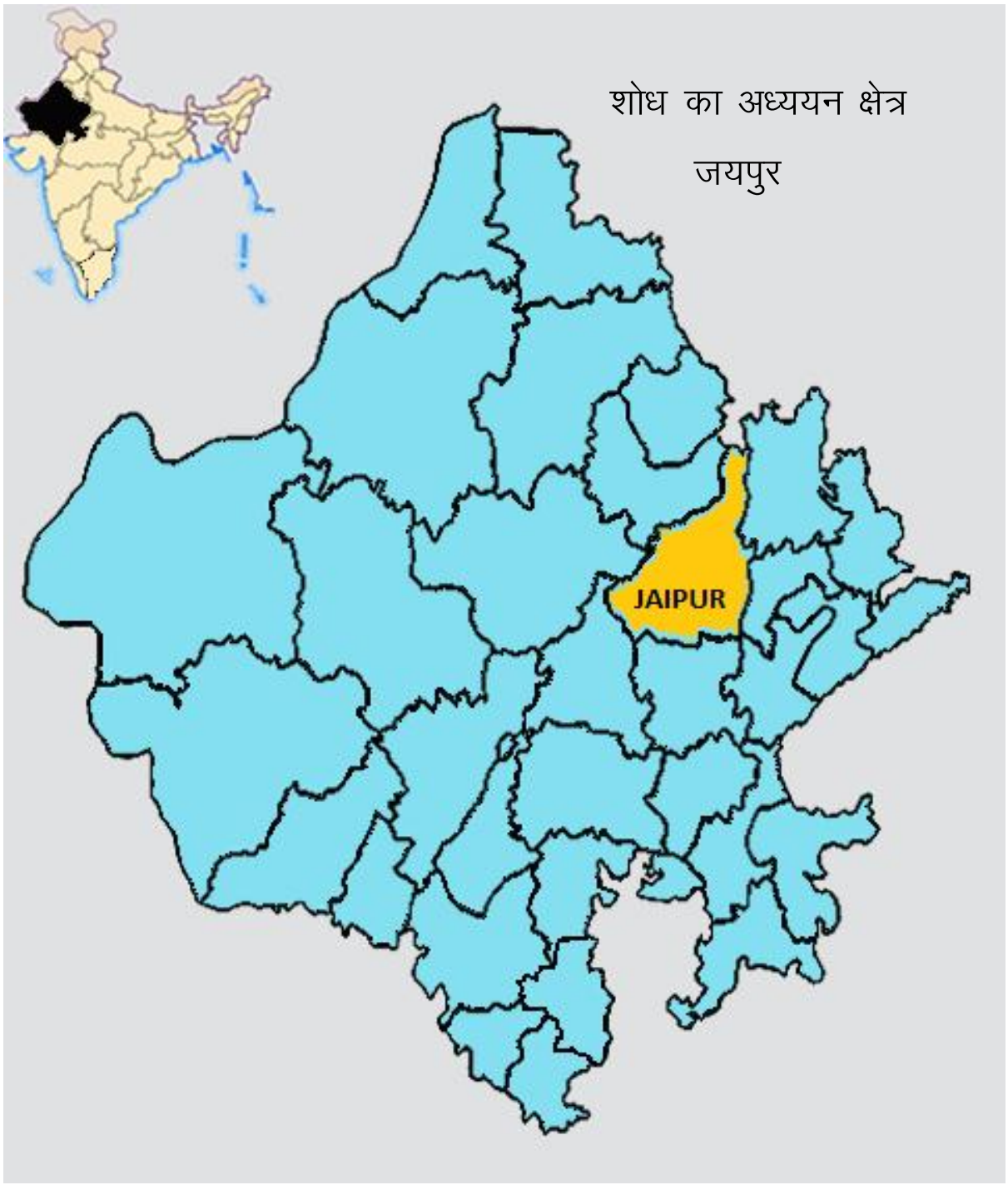

जयपुर जिले मे अनुसूचित जाति

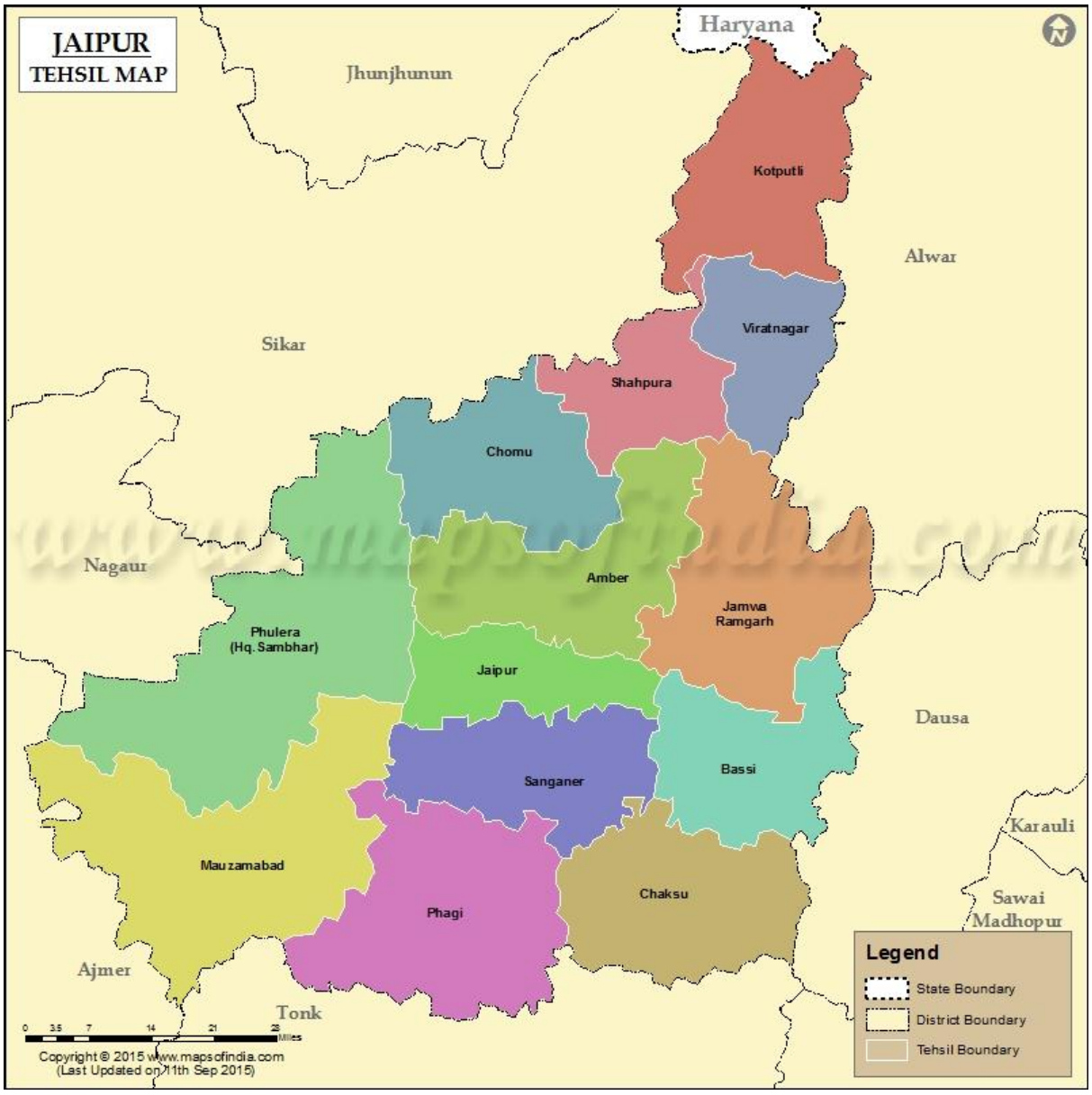

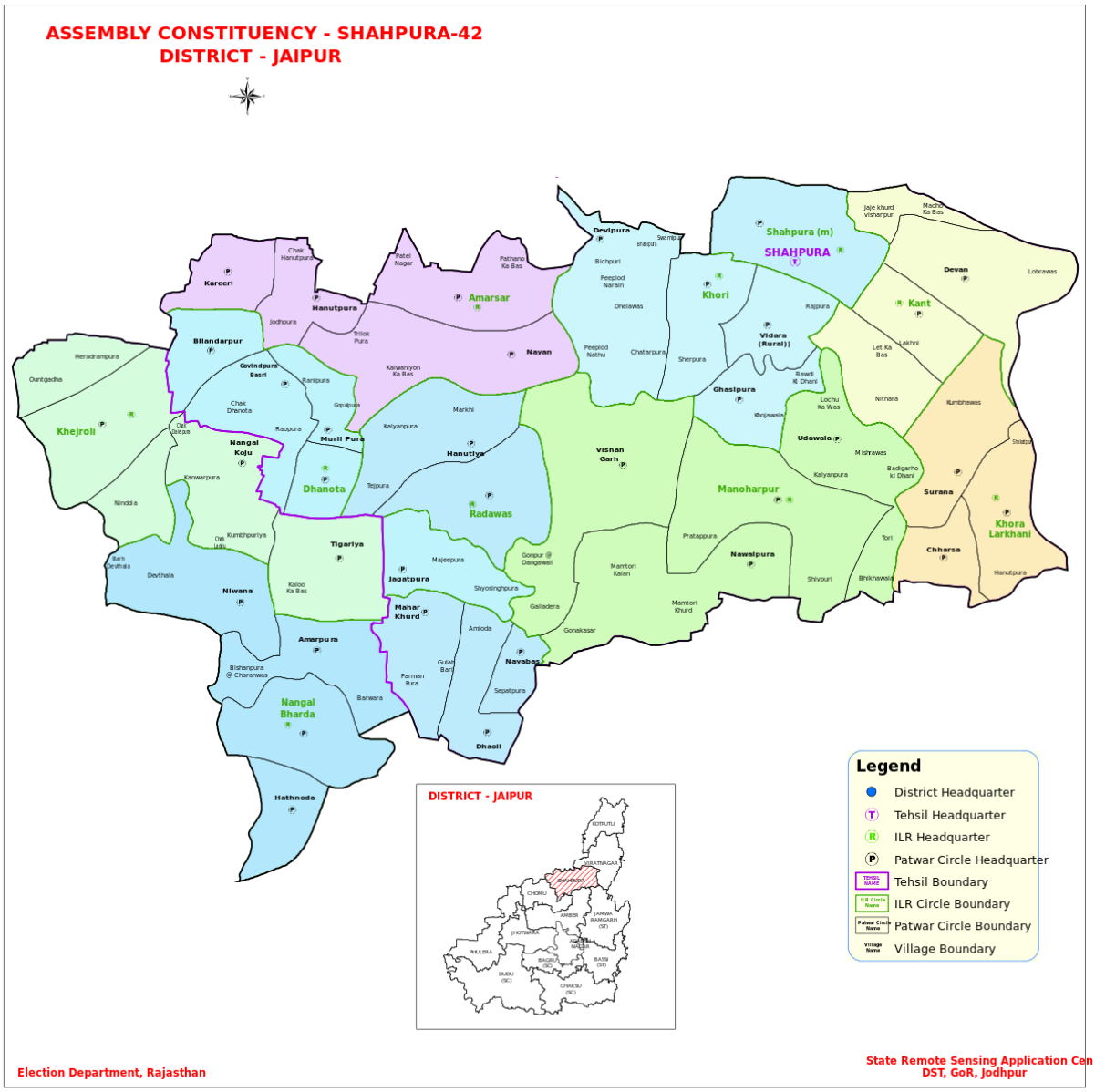
ASSEMBLY CONSTITUENCY - SHAHPURA-42
DISTRICT - JAIPUR
Shahpura (m)
SHAHPURA
Devipura
Khori
Amarsar
Kareeri
Hanutpura
Bilandarpur
Govindpura Basri
Nayan
Khejroli
Nangal Koju
Dhanota
Muril Pura
Hanuttya
Radawas
Vishan Garh
Ghasipura
Vidara (Rural))
Udawala
Manoharpur
Nawalpura
Kant
Devan
Surana
Khora Larkhani
Chharsa
Tigariya
Jagatpura
Mahar Khurd
Niwana
Amarpura
Nangal Bharda
Hathnoda
Nayabas
Dhaoli
Legend
District Headquarter
Tehsil Headquarter
ILR Headquarter
Patwar Circle Headquarter
Tehsil Boundary
ILR Circle Boundary
Patwar Circle Boundary
Village Boundary
DISTRICT - JAIPUR
Election Department, Rajasthan
State Remote Sensing Application Cen
DST, GoR, Jodhpur

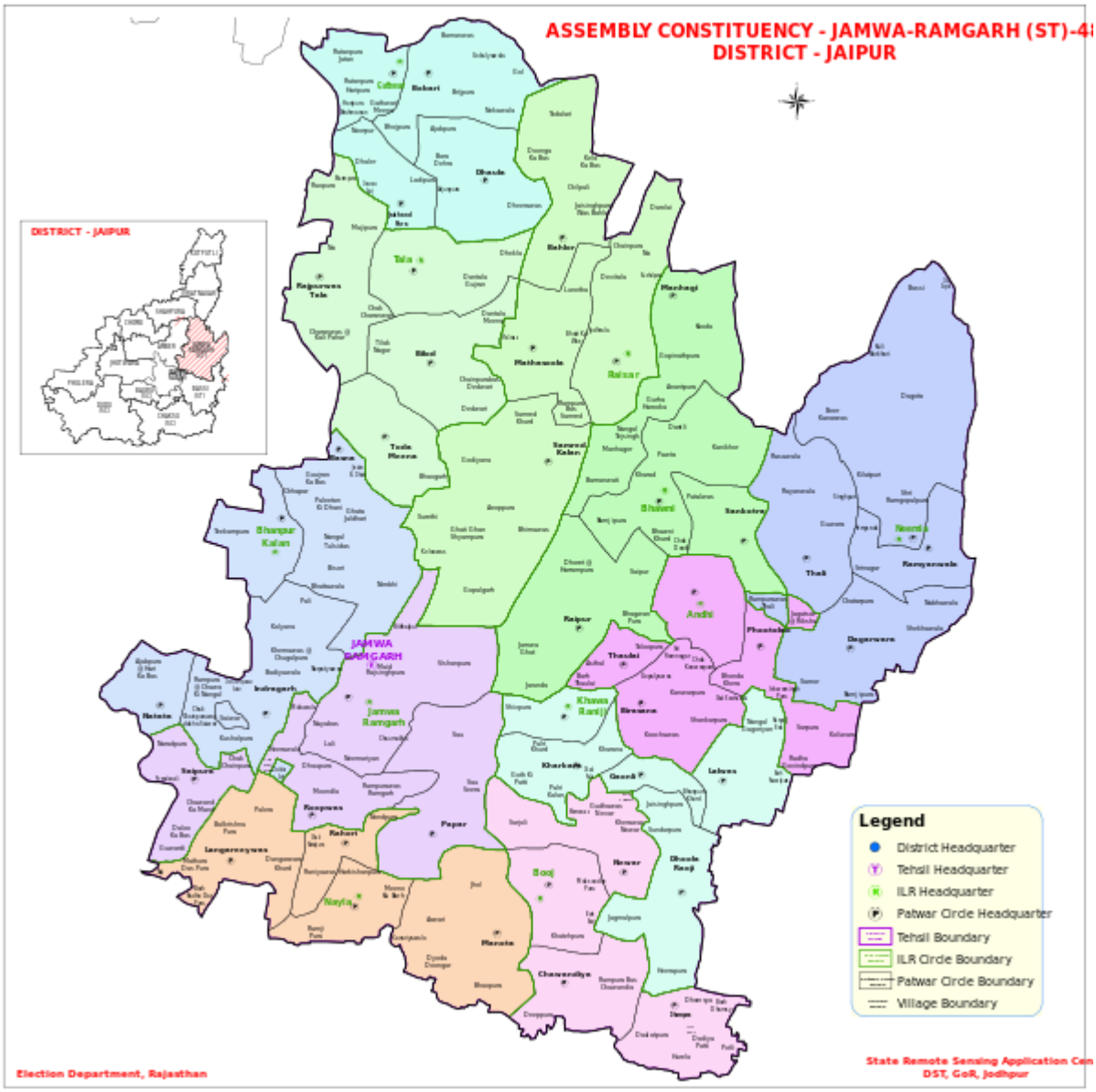

राजस्थान में 33 जिलें स्थित है इसकी राजधानी जयपुर है जो शोध का क्षेत्र है। इसका क्षेत्रफल 11152 वर्ग कि.मी. है। यह राजस्थान के उत्तरी तथा पूर्वी एवं मध्यवर्ती क्षेत्र मे फेला हुआ है। जिसका अंक्षाश एवं देशान्तरीय विस्तार 27^0 उत्तरी अंक्षाश से 74^0 पूर्वी देशान्तर है। जयपुर जिला जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा जिला है। इसकी जनसंख्या 66,26,178 है। तथा लिंगानुपात 901 एवं जनघनत्व 598 पाया

जाता है। जो कि राजस्थान की कुल जनसंख्या का 9.66 प्रतिशत है। यह उपार्द्र शुष्क जलवायु वाला जिला है। इसके मध्य अरावली पर्वतमाला पाई जाती है। जयपुर जिले मे अनुसूचित जाति जनसंख्या 1003302 है। यह सम्पूर्ण जिले की 15.1 प्रतिशत है जो राजस्थान मे सबसे अधिक पायी जाती है।

यह पूर्व का पेरिस, श्री रंगदीप, पिंकसिटी तथा छोटी काशी आदि नामों से जाना जाता है। यहॉ अनुसूचित जाति की जनसंख्या राजस्थान के अन्य जिलों से अधिक पायी जाती है। उक्त तहसीलों में जाकर 200 महिलाओं का समूह बनाकर अध्ययन करेंगे।

शोध का महत्त्व –

जनसंख्या एवं श्रम–शक्ति का प्रमुख भाग होने के बावजूद भी अनुसूचित जाति महिला न सिर्फ उपेक्षित है, बल्कि अत्यधित शोषण का शिकार भी है।

महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भौगोलिक परिस्थिति, सामाजिक परिवेश, आर्थिक क्रियाएं महत्वपूर्ण योगदान देती है। भारत में जनसंख्या भूगोल पर व पंचायतीराज पर अनेक अनुसंधान हुए हैं, लेकिन अनुसूचित जाति महिला सशक्तिकरण पर भूगोल में कोई विशेष शोध कार्य नहीं हुए हैं।

यह शोध अनुसूचित जाति महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में अध्ययन करने वालों के लिए ज्ञानवृद्धि में सकारात्मक एक उपयोगी स्त्रोत बन सकेगा।

नीति–निर्धारकों, प्रशासकों, सामाजिक एवं गैर सामाजिक संगठनों के लिए प्रस्तावित अध्ययन अपनी उपयोगिता को प्रमाणित कर सकेगा, इस दृष्टि से प्रस्तावित यह अध्ययन एक व्यवहारिक एवं राष्ट्रीय महत्व के लिए उपयोगी होगा।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जाति महिला सशक्तिकरण की पृष्ठभूमि का भौगोलिक अध्ययन करना।
2. समाज में महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में महिलाओं की भूमिका का आंकलन करना।
3. चयनित क्षेत्र में अनुसूचित जाति महिला सशक्तिकरण योजनाएं व कार्यक्रम की सार्थकता का मुल्यांकन करना।
4. अनुसूचित जाति महिला सशक्तिकरण के भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिवेश को जानना।
5. शहरी एवं ग्रामीण अनुसूचित जाति महिला सशक्तिकरण का स्थानिक अध्ययन करना।

साहित्य पुनरावलोकन :–

राम आहुजा (2010), सामाजिक अनुसंधान, डॉ0 सुरेश चन्द्र बंसल (1989) भारत का वृहद भूगोल, डॉ0 आर.सी. तिवारी (2011) भारत का भूगोल, डॉ0 अल्का गौतम आर्थिक भूगोल के मूलभूत सिद्धांत में भारत की अनुसूचित जातियों की परिभाषा एवं जनसंख्या तथा उसका वर्गीकरण का अध्ययन।

माजिद हुसैन (2012) भारत का भूगोल, डॉ0 सी. बी. मामोरिया एवं डॉ0 एस. डी. (1979) भारत का आर्थिक विकास में महिला सशक्तिकरण के आंकडे प्रस्तुत किए है।

यशपाल सिंह (2009) भूगोल, हीरालाल यादव (2008) शोध प्रविधि एवं मात्रात्मक भूगोल डॉ. इन्दिरा मिश्रा (2000) गरीब महिला, उत्थान एवं रोजगार, अमृत्य सेन (1993) भारत विकास की दिशाएं, प्रज्ञा शर्मा महिला विकास और सशक्तिकरण में अनुसूचित जाति महिला सशक्तिकरण हेतु लेख प्रस्तुत किए हैं।

वही. के तिवारी (1997) भारत का जनसंख्या भूगोल, डॉ0 आर. के. गुर्जर तथा डॉ0 बी.सी. जाट मानव भूगोल में भारत की जनसंख्या एवं क्षेत्रफल तथा आर्थिक पक्षों का अध्ययन किया है।

सन् 1850 में ब्रह्म समाज के नेतृत्व में अनुसूचित जातियों की शिक्षा की ओर गम्भीरता से ध्यान दिया गया, साथ ही 1870 में प्रार्थना समाज द्वारा अस्पृश्ययों की शिक्षा के लिए रात्रिकालीन विद्यालय प्रारम्भ किया गया। आर्य समाज थियोसफिकल सोसायटी ऑफ इण्डिया ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया।

स्वतंत्र भारत में संवैधानिक नीतियों के अनुपात में, सरकार द्वारा राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अस्पृश्य जातियों के शैक्षणिक विकास के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किये गये किन्तु वैधानिक सुरक्षा और कल्याणकारी योजनाओं के बावजूद वांछनीय परिणाम प्राप्त नहीं हुए। प्रस्तुत शोध प्रबन्धन के सन्दर्भ में जिन शोध अध्ययनों का अध्ययन किया गया उनमें पिम्पली (1980) द्वारा किया पंजाब के अनुसूचित जाति के शैक्षणिक जीवन, सामाजिक दृष्टिकोण, व्यावसायिक अभिप्रेरणा से सम्बन्धित अध्ययन, कोहन (1961) द्वारा चमार जाति के सदस्यों की बदलती परिस्थितियों का अध्ययन, उषा राव (1981) द्वारा भारत में अनुसूचित जातियों (जाटव, बाल्मीकी, धोबी और खटिक) की निर्योग्यताओं का अध्ययन।

इन अध्ययनों के अतिरिक्त तारा परमार (2004) अनुसूचित जाति महिला एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन, राजस्थान के डेल्टा मेघवाल (2010) अनुसूचित जाति महिला सशक्तिकरण, पी.एन.रछौया (2014)रैगर जाति का इतिहास एवं संस्कृति का अध्ययन, गोविन्द सिंह (1990), रामगोपाल सिंह (1963), एन.एन. सिंह (1996), विनय चन्द्र मिश्रा (1991), विनीता श्रीवास्तव (1972), के.पी. सिंह (1972), नरूला उमानन्दा (1967), बी.आर.नन्दा (1976), पर्वथम्मा (1984), के. डी. गंग्रोडे (1974), ओ.एम.लिंच (1969), एस.एस. अनन्त (1992), ए.मठ (1975), सच्चिदानन्द (1980), डा. पूरणमल (1999) जी.पी. वर्मा (1980), शिशिर कुमार (1985), आर.एस. खरे आदि के अध्ययन महत्वपूर्ण हैं।

कुछ समाज वैज्ञानिकों द्वारा अनुसूचित जाति समाजों से सम्बन्धित देश के विभिन्न भागों में अध्ययन किया। अनुसूचित जातियाँ जिन्हें उस समय ''डिप्रेस्ड क्लासेज नाम से सम्बोधित किया जाता था, राजनीतिक शक्ति के रूप में 1930 में डा. बी.आर. अम्बेडकर के नेतृत्व में उभर कर सामने आई, जो हिन्दूवाद एवं ब्राह्मणवाद के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने यह महसूस किया कि अनुसूचित जाति जातियां अपनी निर्योग्यताओं से छुटकारा केवल हिन्दुओं के समान अधिकार प्राप्त होने पर ही कर सकती है।" डा. अम्बेडकर इन जातियों को मुख्यतः राजनीतिक शक्ति प्रदान करने के पक्ष थे। यही कारण था कि पूना पैक्ट में इन जातियों की जनसंख्या के अनुपात में स्थान आरक्षित रखने का प्रवाधान किया गया।"

भारत में अन्य सामाजिक समुदयों की तुलना में अनुसूचित जाति समाज पर शिक्षा शास्त्र के अन्तर्गत बहुत कम अध्ययन है। सर्वप्रथम एक अनुसूचित जाति चमार पर विस्तृत अध्ययन समाजशास्त्र विषय के अन्तर्गत 1920 में ब्रिग द्वारा किया गया। इस अध्ययन में राजस्थान के चमार जाति के लोगों के जीवन विश्वासों एवं व्यवहारों पर गहराई से अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से यह

निष्कर्ष निकला कि ईसाई मिशनरियों ने राजस्थान के चमार जाति के लोगो को समाज में एक सन्तोषजनक स्थान दिलाने एवं धार्मिक क्रियाकलापों में सहभागिता का अवसर प्रदान किया।

अनुसूचित जाति के दो समुदायों बाल्मीकी एवं रामगरियो को लेकर सब्बरवाल ने पंजाब में एक अध्ययन 1972 में किया जिसका उद्देश्य उन सामाजिक प्रक्रियाओं को, जो एक वर्ग या प्रस्थिति समूह से परिसंचरण के लिए उत्तरदायी है एंव एक अप्रतिबन्धित व्यवस्था, जिसमें कोई व्यक्ति समूह अपनी स्थिति निर्धारित कर सके, प्रगट करना था।

महार द्वारा सम्पादित ''द अन्टचेब्ल्स इन कम्पटरेरी इंण्डिया" एक महत्वपूर्ण संकलन है जो अनुसूचित जाति समाज से सम्बन्धित अध्ययन उपलब्ध कराता है इसमें ग्रामीण समुदायों में अस्पृश्ताओं की भूमिका, धार्मिक सुधार, अस्पृश्यता उन्मूलन के सरकारी प्रयास और प्रस्थिति परिवर्तन में सामाजिक–मनोवैज्ञानिक काराकों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

अनुसूचित जातियों पर एक समाजशास्त्र अध्ययन ''डा. तारक परमार" द्वारा किया गया। इसमें स्पष्ट किया गया कि शिक्षा, सम्पत्ति एवं जातीय श्रेष्ठता आरक्षण, उच्च शिक्षा एवं आर्थिक सम्पन्नता के कारण अनुसूचित जाति लोग उच्च पद प्राप्त कर पाने में सफल हुये हैं।

शोध से संबन्धित पूर्व साहित्य की रिक्तियाँ/कमियाँ

शोध से संबंधित पूर्व साहित्य के अध्ययन के फलस्वरूप शोधकर्ता ने यह ज्ञात किया कि पूर्व साहित्य में शोध विषय से सम्बन्धित लेख, प्रतिवेदन, शोध प्रबंध व पुस्तकों में अनुसूचित जाति समाज की समाजिक स्थिति तथा अनुसूचित

जाति महिलाओं की सामाजिक स्थिति के अध्ययन मे निम्नलिखित कमियाँ शोधकर्ता द्वारा व्यक्त की गई।

अनुसूचित जाति समाज की वस्तुस्थितियों का अध्ययन पूर्ण रूप से नही किया गया तथा अनुसूचित जाति समाज की वर्तमान समाज मे क्या स्थिति है का भी अध्ययन अल्प किया गया है। अनुसूचित जाति जाति की भौगोलिक परिदृय इस प्रकार है, कहां निवास करती है? ऐसी भौगोलिक दषाओं का भी अध्ययन नही किया गया इसके साथ–साथ अनुसूचित जाति समाज की समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक पक्षों का भी पूर्ण अध्ययन नहीं किया गया।

पूर्व शोधकर्ताओं ने पूर्व साहित्य में अनुसूचित जाति समाज की महिलाओं की वर्तमान समाज में उनकी सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति कैसी है? कितना परिवर्तन हुआ? इन सभी आयामों का कम ही अध्ययन किया गया। तथा अनुसूचित जाति महिला उत्थान के लिए संचालित सरकारी योजनाएं कार्यक्रम नीतियां कहा तक लागू की गई है का भी पूर्ण रूप से अध्ययन पूर्व शोध साहित्य में नही किया गया।

परिकल्पनाऐं (Hypothesis) :–

1. समाज में महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में महिलाओं के योगदान की भूमिका सकारात्मक है अथवा नकारात्मक है।
2. महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक स्थिति एवं राजनैतिक स्थिति और महिला सशक्तिकरण में सह–सम्बंध होगा।
3. अशिक्षित महिलाओं का सशक्तिकरण कम होता है।
4. राष्ट्रीय योजनाओं व कार्यक्रमों तथा पंचायतीराज में महिलाओं की भूमिका, पुरूषों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होती है।

शोध प्रविधियाँ एवं अध्ययन तकनीकी –

विषय के चयन से लेकर शोध–समस्या शोध के अभिकल्प, तथ्य सामग्री के संकलन तथा शोध के निष्कर्षो का निर्वाचन आदि में प्रविधियों का उपयोग किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु दो प्रकार के आंकड़ों का संकलन किया जाता है –

1. प्राथमिक स्त्रोत

2. द्वितीय स्त्रोत

प्राथमिक आंकड़े/स्त्रोत –

प्राथमिक ऑकडें शोधकर्ता अध्ययन क्षेत्र में साक्षात्कार, प्रश्नावली, अनुभवात्मक, तथ्यात्मक, वास्तविक तथ्य प्राप्त किया जायेगा। शोध क्षेत्र मे शोधकर्ता शाहपुरा, आमेर तथा जमवारामगढ़ एवं फागी तहसीलों मे इकाई तथा प्रतिचयन विधि से उक्त तहसीलों मे 200–200 महिला समूह से मिलकर उनकी सामाजिक आर्थिक राजनैतिक स्थितियों का अध्ययन किया जायेगा।

द्वितीय स्त्रोत/आंकड़े –

अनुसूचित जाति महिलाओं के वर्चस्व का अध्ययन हम द्वितीय आकड़ों, पत्र–पत्रिकाऐं तथा विभिन्न पुस्तको एवं विभिन्न सरकारी संस्थानों से, अप्रकाशित समस्त लिखित सामग्री को सम्मिलित करके शोध के वास्तविक उद्देश्य तक पहूँचने की कोशिश करेंगे।

अनुसूचित जाति महिला उत्थान से सम्बन्धित विभिन्न कार्यालयों में जाकर आंकड़े प्राप्त करेंगे।

- आंकडो की अभिव्यक्ति रेखाचित्र मानचित्रण द्वारा स्पष्ट की जायेगी। आंकडो के विशलेषण हेतु सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जायेगा।

शोध कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीय ऑकडों के द्वारा अनुसूचित जाति महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्र.सं.	रचियता	पुस्तक एवं पब्लिशर्स
1.	आहुजा राम	सामाजिक अनुसंधान (2010), रावत पब्लिकेशन, जयपुर
2.	बंसल डॉ0 सुरेश चन्द्र	भारत का वृहद भूगोल (1989) प्रकाशन, मेरठ
3	तिवारी डॉ0 आर. सी.	भारत का भूगोल (2011)
4	गौतम डॉ0 अल्का	आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद
5	हुसैन, माजिद	भारत का भूगोल (2012)टाटा हिल्स एज्युकेशन प्राईवेट लि., नई दिल्ली
6	मामोरिया डॉ0 सी. बी.एवं डॉ0 एस. डी.	भारत का आर्थिक विकास (1979), साहित्य भवन, आगरा
7	सिंह यशपाल	भूगोल (2009), व्ही. के. (इण्डिया) इंटरप्राइजेज, नई दिल्ली।
8	यादव हीरालाल	शोध प्रविधि एवं मात्रात्मक भूगोल (2008), राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली।
9	मिश्रा डॉ. इन्दिरा	गरीब महिला, उत्थान एवं रोजगार (2000), किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली।
10	सेन अमृत्य	भारत विकास की दिशाए (1993), राजपाल एण्ड संस, कश्मिरी गेट, दिल्ली।

11	शर्मा प्रज्ञा	महिला विकास और सशक्तिकरण, आविष्कार पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स, जयपुर।
12	तिवारी व्ही. के	भारत का जनसंख्या भूगोल (1997), हिमालया पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली।
13	गुर्जर डॉ0 आर. के., जाट डॉ0 बी. सी.	मानव भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
14	मामोरिया चतुर्भुज	भारत का भूगोल (जनसंख्या आंकडे प्राप्त किये) साहित्य भवन, आगरा
15	भल्ला आर. एल.	राजस्थान का भूगोल (राजस्थान की जनसंख्या) कुलदीप प्रकाशन,
16	गुर्जर डॉ. आर. के.	मानव भूगोल (अनुसुचित जाति स्थितियों का अवलोकन) पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
17	घोष जी. के.	अनुसूचित जाति महिला एवं भारतीय समाज पृ.सं. 13
18	तिवारी आर.सी.	राजनीतिक भूगोल पृ.सं. 01, प्रवालिका पब्लिकेशन
19	संजीव कुमार	जिला दिग्दर्शन, (जयपुर जिले की जनसंख्या के आंकडे प्राप्त किये)
20	संजीव कुमार	क्रोनोलॉजी भूगोल विशेषांक
21	भारत सरकार	योजना विशेषांक 2017 पृ. सं. 4
22	ओझा एवं ओझा	अनुसूचित जाति समाज की कला एवं संस्कृति का भौगोलिक अध्ययन
23	रछोया पी.एन.	रैगर समाज की कला संस्कृति एवं इतिहास
24	चन्द्र मौल एवं बी. आर.आर. अम्बेडकर	मैन एण्ड हिज विजन (1991)
25	ग्रामीण विकास	ग्रामीण विकास– लोक प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर –

	प्रतिवेदन 2015	
26	पी. सी. जैन, शशि	अनुसूचित जाति महिला की समाज मे स्थित का गहन एवं सुक्ष्म अध्ययन पृ. सं. 14
27	पी. जी. जोब दण्ड़, प्रभा आप्टे	भारतीय समाज मे नारी पृ. सं. 115
28	सम्पा गुहा	बदलते समाज मे महिला की स्थिति
29	प्रधुमन कुमार तथा बी. एल. फडिया	ग्रामिण विकास दिग्बोध पृ. सं. 33
30	सूचना राजस्थान सरकार	सुजस प्रतिवेदन 2016–17
31	डॉ. विष्णु भगवान	प्रतियोगिजा दर्पण 2017
32	देवेन्द्र कुमार ठाकुर	रूरल डवलपमेन्ट एण्ड पोलिटिकल लिडरशिप इन इण्डिया 2004
33	ऋतु सारस्वत	राजनीति मे महिला नेतृत्व सम्भावनाएं की तलाश 2009
34	वंदना बंसल	पंचायती राज में महिला भागीदारी कल्पना पब्लिकेशन दिल्ली पृ. सं. 32
35	बी. एन. युगान्तर एवं नीला मुखर्जी	स्टडीज इन विपेज इण्डिया : इश्यूज इन रूरल डवलपमेन्ट – 2010
36	शर्मा, डां. श्रीनाथ	पंचायत राज एवं ग्रामीण विकास आदित्य, पब्लिशर्स,
37	वार्षिक प्रतिवेदन,2008 –09	ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग राजस्थान, जयपुर
38	टग्रवाल	ग्रामीण विकास एवं सहकारिता दी स्टूडेण्टस बुक

		कम्पनी जयपुर
39	बवेल बसन्ती लाल	पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास योजनाएं राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
40	बाटलीवाला श्रीलता	''मीनिंग ऑफ वूमन एम्पावरमेंट : न्यू कॉन्सेप्टस फॉम एक्शन'' हारवर्ड युनिवर्सिटी, प्रेस–बोस्टन
41	भार्गव डी. के.	''ग्रामीण निर्माण'' पंचवटी प्रकाशन जयपुर
42	घोष जयन्ति	''नेवर डन एण्ड पूवरलि पेड'' वूमैनज वर्क इन ग्लोबलाइजिंग इण्डिया'' वूमेन अनलिमिटेड हॉज खास, नई–दिल्ली – 2009
43	गंगुली सुमित लेरी	''द स्टेट ऑफ इण्डियाज डेमोक्रेसी'' द मार्क जॉन हॉप्किंस यूनिवर्सिटी प्रेस
44	एम.पी.बोरायन	''इम्पावरमेंट ऑफ रूरल वीमन : द डिटेरेट्स एण्ड डिटरमिनेंटस – 2012
45	महिपाल	पंचायती राज, अतीत, वर्तमान और भविष्य''– सारांश प्रकाशन दिल्ली
46	वर्मा एस. एल.	'पंचायती राज ग्राम स्वराज एण्ड फेडरल पॉलिसी''
47	यादव सुबे सिंह	''ग्रामीण विकास के नये क्षितिज'' मानक पब्लिशर्स प्रा. लि. दिल्ली
48	राजपूत आर.एन	''पंचायती राज इन इण्डिया, दीप पब्लिकेशन दिल्ली – 1984
49	पण्ड़ित नेहरू	सामुदायिक विकास और पंचायती राज, संस्था साहित्य मण्डल– दिल्ली
50	राधवराम डी.पी.	पंचायत एण्ड़ रूरल डवलपमेंट एशियों''
51	सत्यभान, यादव	ग्रामीण विकास का आधुनिक दर्शन सनलाईन्स

	दुबे	पब्लिकेशन – जयपुर
52	तिवाड़ी, चौधरी	''राजस्थान में पंचायत कानून'' ऋचा प्रकाशन – जयपुर

पत्र–पत्रिकाएँ

1. राजस्थान का आर्थिक समीक्षा – 2011–12
2. महिला एवं बाल विकास योजना 2016–17
3. भारत सरकार प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण की मासिक योजना विशेषांक 2016–17
4. 'सूजस' राजस्थान सरकार प्रकाशन
5. इण्ड़िया टुडे – नई दिल्ली
6. क्रोनोलॉजी भूगोल विशेषांक
7. राजस्थान की विभिन्न विकास योजना की समीक्षा – जिला परिषद जयपुर
8. ग्राम – पंचायत प्रतिवेदन – शाहपुरा
9. आर्थिक समीक्षा – नई दिल्ली
10. दैनिक भास्कर के लेख
11. राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित लेख
12. आर्थिक समीक्षा – नई दिल्ली
13. ''आउट लुक बिजनेस''
14. योजना आयोग की रिपोर्ट – 2012–13
15. ग्रामीण विकास कार्य पर एक नजर 2012 ग्रामीण–विकास मंत्रालय

16. भारत डोगरा – ''सार्थक है, महिलाओं का आरक्षण''

17. राजस्थान जनसंख्या प्रतिवेदन 2011

Outline of the synopsis approved

शोधकर्ता
प्रभु दयाल रैगर
(पीएच.डी. छात्र)
सम्राट पृथ्वीराज चौहान, राजकीय
महाविद्यालय, अजमेर

शोध निर्देशिका
डॉ0 सुनिता पचौरी
सह आचार्य भूगोल,
भूगोल विभाग
सम्राट पृथ्वीराज चौहान, राजकीय
महाविद्यालय, अजमेर